



बिकने वाला है पाकिस्तान ?

दिवालिया होने में कितने दिन शेष

चीन हड़प लेगा पूरा देश !

Home / News / Zee News / भिखमंगों का 'खलीफा': खुद गले तक कर्ज में डूबा, अब पाकिस्तान बना सबसे ज्यादा लोन लेने वाले देशों का 'सरदार'

भिखमंगों का 'खलीफा': खुद गले तक कर्ज में डूबा, अब पाकिस्तान बना सबसे ज्यादा लोन लेने वाले देशों का 'सरदार'



Zee News 6 hrs ago



आ तंकवादियों को पालने-पोसने में माहिर पाकिस्तान को अब ऐसी जिम्मेदारी मिली है, जिसमें कोई भी उसका सानी नहीं है. उसको अब कर्जदारों का खलीफा बनाया गया है. यानी कर्ज के मुद्दे पर जो बातचीत होगी, उसकी वह अगुआई करेगा.

Navbharat Times

"कर्ज का लंबा अनुभव!": UN के 'कर्जदार देशों के मंच' का अध्यक्ष बना पाकिस्तान, लोगों ने लिए मजे

इस्लामाबाद: पाकिस्तान को अगर किसी चीज में सबसे ज्यादा अनुभव है तो वह है 'कर्ज'...

20 hours ago



Divya Kirti

कर्जदार देशों का नया मंच, पाकिस्तान बना अध्यक्ष

दुनिया के सबसे अधिक कर्जदार देशों ने एक नया मंच बनाया है जिसका नेतृत्व...

13 hours ago



Topics of Discussion

- 1 हालिया घटनाक्रम
- 2 किसी देश के कर्ज को कैसे मापा जाता है ?
- 3 कोई देश कितने प्रकार से कर्ज लेता है ?
- 4 पाकिस्तान के ऊपर कितना कर्ज है ?
- 5 पाकिस्तान का कर्ज एक जाल कैसे बन चुका है ?
- 6 आईएमएफ और अन्य संस्थाएँ पाकिस्तान को कड़ी चेतावनी क्यों दे रही हैं ?
- 7 चीन का कर्जा पाकिस्तान पर भारी क्यों पड़ रहा है ?
- 8 पाकिस्तान के कौन से क्षेत्र चीन के पास जा रहे हैं ?



बॉरोअर्स प्लेटफॉर्म: विकासशील देशों की पहल

- संयुक्त राष्ट्र के महासचिव **एंTONियो गुटेरेस** के समर्थन से विकासशील देशों ने **अप्रैल 2026** में यह पहल शुरू की थी।
- इसमें अब तक **31 औपचारिक सदस्य** शामिल हो चुके हैं।
- UN ट्रेड एंड डेवलपमेंट या **UNCTAD** इसका सचिवालय है।
- गुटेरेस ने विकासशील देशों के सामने मौजूद आर्थिक हालात को '**परफैक्ट स्टॉर्म**' (बहुत गंभीर संकट) बताया है।



पाकिस्तान के वित्त मंत्री सीनेटर मुहम्मद औरंगजेब ने

- सोमवार को थाईलैंड में पाकिस्तान की ओर से 'बॉरोअर्स प्लेटफॉर्म' (उधार लेने वाले देशों का मंच) की अध्यक्षता संभाली.
- यह एक प्लेटफॉर्म है, जिसे यूएन का समर्थन हासिल है.
- इसे कर्ज के बोझ तले दबे देशों की मदद के लिए बनाया गया है ताकि वे एक-दूसरे से लोन मैनेजमेंट सीख सकें.
- तकनीकी जानकारी एक-दूसरे को दे सकें और विकास के लिए फंडिंग एर अंतरराष्ट्रीय बातचीतों में अपनी स्थिति बेहतर कर सकें.
- हालांकि, इसमें एक पेच है. यह लेनदारों के साथ बातचीत करने के लिए कोई साझा मंच नहीं है.



1

कुल कर्ज की राशि (Absolute Debt)

- यह सबसे सरल तरीका है। इसमें यह देखा जाता है कि किसी देश की सरकार ने **कुल मिलाकर कितने रूपये या डॉलर का कर्ज** लिया हुआ है।



2 कर्ज-से-जीडीपी अनुपात (Debt-to-GDP Ratio)

- किसी देश का कर्ज कम है या ज्यादा, इसका सही अंदाजा सिर्फ कुल रकम से नहीं लगाया जा सकता। इसके लिए देश की कुल कमाई यानी **जीडीपी (GDP)** से कर्ज की तुलना की जाती है।

**Debt-to-GDP
Ratio =**

$\frac{(\text{कुल कर्ज} / \text{कुल जीडीपी}) \times 100}{}$



● समझने का आसान तरीका:

मान लीजिए आपकी सालाना कमाई **₹10 लाख** है और आप पर **₹2 लाख** का कर्ज है, तो आपका कर्ज आपकी कमाई का **20%** है। जिसे आसानी से चुकाया जा सकता है। लेकिन अगर कमाई **₹10 लाख** है और कर्ज **₹20 लाख (200%)** है, तो स्थिति चिंताजनक है।



कर्ज = 20%

जिसे आसानी से चुकाया जा सकता है।



कर्ज = 200%

तो स्थिति चिंताजनक है।

● सकारात्मक सीमा:

सामान्यतः किसी देश का **कर्ज-से-जीडीपी अनुपात** जितना कम हो, उसकी आर्थिक स्थिति उतनी ही **मजबूत** मानी जाती है।



3

कर्ज के प्रकार के आधार पर वर्गीकरण

(A) आंतरिक कर्ज (Internal Debt) vs बाहरी कर्ज (External Debt)

आंतरिक कर्ज (Internal Debt)

- जो देश की सरकार अपने ही नागरिकों, बैंकों या संस्थाओं से (बॉन्ड जारी करके) लेती है।



बाहरी कर्ज (External Debt)

- जो दूसरे देशों, विदेशी बैंकों या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं (जैसे विश्व बैंक, IMF) से विदेशी मुद्रा में लिया जाता है।



(B) अल्पकालिक (Short-term) vs दीर्घकालिक (Long-term) कर्ज

अल्पकालिक (Short-term)

- जिसे 1 साल के भीतर वापस चुकाना होता है।



दीर्घकालिक (Long-term)

- जिसे चुकाने के लिए कई वर्षों या दशकों का समय मिलता है।



पाकिस्तान का कुल सार्वजनिक ऋण (Total Public Debt)

पाकिस्तान के वित्त मंत्रालय (Ministry of Finance) और स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान (SBP) की रिपोर्ट के अनुसार:

● कुल सार्वजनिक ऋण:

- वित्त वर्ष 2025-26 के अंत (जून 2026) तक पाकिस्तान का कुल सार्वजनिक ऋण बढ़कर लगभग **86.72 लाख करोड़ रुपये (Rs 86.72 Trillion)** हो गया है,

● डेट-टू-जीडीपी अनुपात (Debt-to-GDP Ratio):

- वित्त वर्ष 2026 के अंत तक यह अनुपात लगभग **68.3%** दर्ज किया गया है।



1

पाकिस्तान की नॉमिनल जीडीपी (Nominal GDP Size)

- पाकिस्तान की कुल नॉमिनल जीडीपी लगभग **0.37 से 0.40 ट्रिलियन डॉलर** (लगभग **370 से 400 अरब अमेरिकी डॉलर**) के आसपास है।



2

डॉलर के टर्म में कुल सरकारी ऋण (Total Public Debt in USD)

- पाकिस्तान का कुल सार्वजनिक ऋण (घरेलू और बाहरी दोनों मिलाकर) लगभग **312 अरब डॉलर** (यानि करीब **0.312 ट्रिलियन डॉलर**) है।
- वहीं, अगर सिर्फ **बाहरी ऋण (External Debt & Liabilities)** की बात करें तो वह लगभग **138.85 अरब डॉलर** (लगभग **0.14 ट्रिलियन डॉलर**) है।



डेट-टू-जीडीपी अनुपात (Debt-to-GDP Ratio - प्रतिशत के रूप में):

- चूंकि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था (GDP) का आकार छोटा है और उस पर कर्ज का बोझ बहुत भारी है, इसलिए इसे प्रतिशत में मापने पर यह **लगभग 68.3% से 70.2%** के बीच आता है।
- इसका सीधा मतलब यह है कि पाकिस्तान अपनी कुल वार्षिक कमाई (GDP) का लगभग **70% हिस्सा** अकेले कर्ज के रूप में पहले से ही दबा बैठा है।



मुख्य स्रोत (Sources):

- 1 Ministry of Finance (Government of Pakistan):**
Annual Debt Review Report & Fiscal Operations Data.
- 2 State Bank of Pakistan (SBP):**
External Debt and Liabilities Reports.
- 3 Economic Affairs Division (EAD), Pakistan:**
Foreign Economic Assistance Reports.



2

पाकिस्तान पर किन-किन देशों और संस्थाओं का ऋण है? (Creditor Breakdown)

पाकिस्तान के आर्थिक मामलों के मंत्रालय (Economic Affairs Division) और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार, बाहरी कर्ज मुख्य रूप से चार श्रेणियों में बंटा हुआ है:

(क) बहुपक्षीय संस्थान (Multilateral Creditors) - लगभग 50% हिस्सेदारी

यह पाकिस्तान के सबसे बड़े बाहरी कर्जदाता हैं जो विकास कार्यों और आर्थिक संकट से उबरने के लिए कर्ज देते हैं:

- **विश्व बैंक (World Bank / IDA & IBRD):** सबसे बड़ा कर्जदाता।
- **एशियाई विकास बैंक (Asian Development Bank - ADB):** दूसरा सबसे बड़ा बहुपक्षीय ऋणदाता।
- **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF):** बेलआउट पैकेज (आर्थिक मदद) के रूप में बड़ा कर्ज।
- **इस्लामिक विकास बैंक (IsDB) और अन्य संस्थाएं** (IFAD, European Investment Bank आदि)।



(ख) द्विपक्षीय ऋण (Bilateral Creditors) - लगभग 30% हिस्सेदारी

जो देश सीधे तौर पर पाकिस्तान को कर्ज या वित्तीय सहायता देते हैं:

- **चीन:** पाकिस्तान का सबसे बड़ा द्विपक्षीय (Bilaterally) कर्जदाता देश है (सीपीईसी-CPEC और अन्य प्रोजेक्ट्स तथा वाणिज्यिक ऋणों के कारण)।
- **सऊदी अरब:** तेल और नकद जमा (Cash Deposits) के रूप में भारी कर्ज/सहायता।
- **संयुक्त अरब अमीरात (UAE):** सेंट्रल बैंक में डिपॉजिट और लोन।
- **कुवैत और अन्य देश।**



पाकिस्तान के बढ़ते ऋण और चीन के कथित '**ऋण जाल**' (**Debt Trap Diplomacy**) को लेकर चिंताएँ तेजी से बढ़ रही हैं। अर्थशास्त्रियों और भू-राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पाकिस्तान जिस आर्थिक संकट से गुजर रहा है, वह उसके **संप्रभुत्व और आर्थिक स्थिरता के लिए घातक साबित हो सकता है।**

इसके पीछे के प्रमुख कारण और लॉजिक निम्नलिखित हैं:

1 चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) और व्यावसायिक ऋण

- **कारण:** चीन ने **CPEC (China-Pakistan Economic Corridor)** के तहत पाकिस्तान में सड़कों, पावर प्लांट और रेलवे जैसी बुनियादी परियोजनाओं के लिए भारी-भरकम निवेश किया है।
- **लॉजिक:** इनमें से अधिकांश फंडिंग रियायती (Concessional) ऋणों के बजाय **वाणिज्यिक ऋणों (Commercial Loans)** के रूप में दी गई है, जिन पर ब्याज दरें बहुत अधिक हैं। पाकिस्तान इन परियोजनाओं से तुरंत इतनी कमाई नहीं कर पा रहा है कि वह समय पर भारी-भरकम ब्याज चुका सके।



2

ऋण का री-फाइनेंसिंग चक्र और 'रोलओवर' की मजबूरी

- **कारण:** पाकिस्तान के पास विदेशी मुद्रा भंडार बेहद कम है। जब उसका कोई पुराना कर्ज (चाहे वह चीन का हो या सऊदी अरब का) चुकाने का समय आता है, तो पाकिस्तान नया कर्ज लेकर पुराना कर्ज चुकाता है।
- **लॉजिक:** इसे वित्तीय भाषा में 'रोलओवर' (Rollover) कहा जाता है। चीन लगातार पाकिस्तान के पुराने कर्जों की समयसीमा आगे बढ़ा रहा है और नए ऋण दे रहा है। इससे पाकिस्तान कभी भी कर्ज के इस दृष्टिक्रम से बाहर नहीं निकल पा रहा है, बल्कि उसकी निर्भरता चीन पर बढ़ती जा रही है।



3

सामरिक संपत्तियों (Strategic Assets) का गिरवी रखना या नियंत्रण

- **कारण:** इतिहास में ऐसे कई उदाहरण देखे गए हैं जहाँ देश भारी कर्ज न चुका पाने पर अपनी रणनीतिक संपत्तियाँ (जैसे बंदरगाह या खदानें) ऋणदाता देश को सौंप देते हैं (जैसे श्रीलंका का हंबनटोटा बंदरगाह)।
- **लॉजिक:** विश्लेषकों का मानना है कि भविष्य में यदि पाकिस्तान चीन का कर्ज चुकाने में पूरी तरह असमर्थ होता है, तो चीन ग्वादर बंदरगाह (Gwadar Port) या बलूचिस्तान के खनिज संसाधनों पर लंबे समय के लिए अपने सामरिक और व्यावसायिक नियंत्रण को और अधिक मजबूत कर सकता है। इससे पाकिस्तान की संप्रभुता (Sovereignty) दांव पर लग सकती है।



4

आंतरिक राजस्व की कमी और जीडीपी का बड़ा हिस्सा ब्याज भुगतान में जाना

- **कारण:** पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी उसका कम कर-से-जीडीपी अनुपात (**Tax-to-GDP Ratio**) है। देश की कुल कमाई का एक बहुत बड़ा हिस्सा टैक्स के जरिए सरकार तक नहीं पहुँच पाता।
- **लॉजिक:** पाकिस्तान सरकार अपने कुल बजट का **40% से 50% से अधिक हिस्सा** केवल पुराने कर्जों का ब्याज चुकाने में खर्च कर देती है। परिणामस्वरूप, देश के विकास कार्यों, स्वास्थ्य, शिक्षा और रक्षा के लिए बहुत कम पैसा बचता है, जिससे अर्थव्यवस्था और ज्यादा पंगु होती जा रही है।



5

पश्चिमी देशों और IMF का कड़ा रुख

- **कारण:** पाकिस्तान को जब भी आर्थिक दिवालियापन से बचना होता है, उसे अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (**IMF**) या पश्चिमी देशों के पास जाना पड़ता है।
- **लॉजिक:** **IMF** पाकिस्तान को बेलआउट पैकेज देने के बदले कड़ी शर्तें रखता है (जैसे सब्सिडी खत्म करना, टैक्स बढ़ाना और बिजली-gas के दाम बढ़ाना)। इससे पाकिस्तान में महँगाई आसमान छूने लगती है, जिससे सामाजिक अशांति और राजनीतिक अस्थिरता पैदा होती है। ऐसे में पाकिस्तान के पास एकमात्र विकल्प चीन की तरफ झुकना बचता है, जो उसे और गहरे जाल में धकेल देता है।



प्रमुख क्षेत्र और परियोजनाएँ - जहाँ चीनी नियंत्रण या गहरी दखलंदाजी सबसे ज्यादा

1

ग्वादर बंदरगाह और उसका फ्री जोन (Gwadar Port & Free Zone, बलूचिस्तान)

- **नियंत्रण की स्थिति:** बलूचिस्तान प्रांत में स्थित इस सामरिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण बंदरगाह को पाकिस्तान ने चाइना ओवरसीज पोर्ट होल्डिंग कंपनी (COPHC) को **43 साल** की लंबी लीज (पट्टे) पर दे रखा है।
- **लॉजिक और चिंता:** यह पोर्ट चीन की '**स्ट्रिंग ऑफ पलर्स**' (String of Pearls) रणनीति का अहम हिस्सा है। इस क्षेत्र के बड़े हिस्से पर चीनी कंपनियों का प्रशासनिक और व्यावसायिक नियंत्रण है। यहाँ आने-जाने वाले स्थानीय लोगों पर भी कड़ी सुरक्षा पाबंदियां रहती हैं, जिसके कारण बलूच राष्ट्रवादी इसका कड़ा विरोध करते हैं।



2

सीपेक (CPEC) के विशेष आर्थिक क्षेत्र (Special Economic Zones - SEZs)

- **नियंत्रण की स्थिति:** चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC) के तहत पाकिस्तान के अलग-अलग हिस्सों (जैसे पंजाब, सिंध, खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान) में कई स्पेशल इकोनॉमिक जोन बनाए जा रहे हैं।
- **लॉजिक और चिंता:** इन औद्योगिक क्षेत्रों में चीनी निवेशकों और कंपनियों को विशेष छूट, टैक्स में छूट और लंबी अवधि के अधिकार दिए गए हैं। आलोचकों का मानना है कि इन क्षेत्रों में पाकिस्तानी कानूनों की बजाय चीनी व्यावसायिक हितों और सुरक्षा मानकों का बोलबाला रहता है।



3

गिलगित-बल्तिस्तान क्षेत्र (Gilgit-Baltistan)

- **नियंत्रण की स्थिति:** यह क्षेत्र पाकिस्तान के नियंत्रण वाला हिस्सा है (जिसे भारत अपना हिस्सा मानता है)। **CPEC** का मुख्य मार्ग (काराकोरम राजमार्ग) इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है।
- **लॉजिक और चिंता:** इस भूभाग पर चीन ने अपनी भारी-भरकम सेना, इंजीनियरों और सुरक्षा बलों की अघोषित मौजूदगी दर्ज करा रखी है। चीन यहाँ बड़े पैमाने पर बुनियादी ढांचा (डैम, सड़कें और सैन्य रसद केंद्र) विकसित कर रहा है। भू-राजनीतिक जानकारों का मानना है कि वित्तीय कर्ज और सुरक्षा के नाम पर चीन इस क्षेत्र में डी-फैक्टो (वास्तविक) नियंत्रण स्थापित कर चुका है।



4. | थार कोयला परियोजनाएं और पावर प्लांट (सिंध)

- **नियंत्रण की स्थिति:**

सिंध के थार रेगिस्तान में स्थित विशाल कोयला भंडार और ऊर्जा उत्पादन संयंत्रों का जिम्मा चीनी कंपनियों के पास है।

- **लॉजिक और चिंता:**

पाकिस्तान इन प्रोजेक्ट्स का भारी-भरकम मुनाफा और कर्ज समय पर चुकाने में असमर्थ रहा है। ऐसे में ऊर्जा क्षेत्र के इन महत्वपूर्ण संसाधनों और वित्तीय लेन-देन पर चीनी नियंत्रण लगातार गहराता जा रहा है, जिससे पाकिस्तान की ऊर्जा सुरक्षा भी चीन के हाथों में गिरवी सी दिखती है।



Thanks For Watching

Follow us for more Updates



@RRESULTMITRAOFFICIAL



Join our Telegram



@SUNILVERMA_THEIASMENTOR



Follow on Instagram



Subscribe Now

Stay Connected

Learn
Share
Grow
Together ♥

Better
Students
Brighter
Tomorrow

DISCIPLINE
CONSISTENCY
SUCCESS

Small
Steps
Big
Results
😊